DR.PUNAM THAKUR, ASST. PROFESSOR

THE GRADUATE SCHOOL COLLEGE FOR WOMEN JAMSHEDPUR

B. Ed DEPARTMENT

SUBJECT :- PEDAGOGY OF SCHOOL SUBJECT SOCIAL SCIENCE (HISTORY)

SEMESTER-II, PAPER-VII A

TOPIC- LECTURE METHOD AND DISCUSSION METHOD

Scanned with CamScanner

8. व्याख्यान विधि
(LECTURE METHOD)

जेम्स एम. ली ने लिखा है—"व्याख्यान एक शिक्षण-शास्त्रीय विधि है जिसमें शिक्षक औपचारिक रूप से नियोजित रूप में किसी प्रकरण या समस्या पर भाषण देता है।"

"The lecture is a pedagogical method whereby the teacher formally delivers a carefully planned expository address on some particular topic or problem."

—James M. Lee

रिस्क के विचारानुसार, "व्याख्यान तथ्यों, सिद्धान्तों या अन्य सम्बन्धों का प्रतिपादन है जिनको शिक्षक अपने सुनने वालों को समझाना चाहता है।"

Scanned with CamScanner

"The lecture is an exposition of facts, principles or other relationships that the teacher wishes his hearers to understand." —**Thomas M. Risk**

एक विधि के रूप में यह विधि यह मानकर चलती है कि सीखने वाला भाषण तथा इंगित किये सम्बन्धों को समझने की योग्यता रखता है। **जेम्स एम. ली** का कथन है कि व्याख्यान विधि को निर्देश या कथन (Telling) प्रविधि (Technique) से नहीं मिलाना चाहिए। निर्देश द्वारा शिक्षक किसी मुख्य सूचना को प्रदान करता है जो छात्रों को अपने शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक होती है। कथन अपने रूप में संक्षिप्त होता है जबकि व्याख्यान काफी बड़ा। व्याख्यान का मुख्य उद्देश्य तथ्यों तथा धारणाओं को क्रमबद्ध रूप में प्रतिपादित करना है।

व्याख्यान विधि के गुण एवं दोष (Merits and Demerits of Lecture Method)

गुण–

1. इसके द्वारा विषय-वस्तु को क्रमबद्ध एवं तार्किक रूप से प्रस्तुत किया जाता है जिससे छात्र सरलता से समझ सकें।
2. यह कम से कम समय में विषय-वस्तु को पूरा करने में सहायक है। साथ ही यह शैक्षिक कुशलता को उत्पन्न करती है।
3. यह छात्रों को सुनने की कला में प्रशिक्षित करती है।
4. इसके द्वारा विषय-वस्तु में निहित सम्बन्धों पर छात्रों के ध्यान को आकृष्ट किया जाता है।
5. यह असंगत तथ्यों की अवहेलना करके छात्रों को संगत तथ्यों को ग्रहण कराने में सहायक है।

दोष–

1. यह छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में निष्क्रिय श्रोता बनाती है।
2. यह शिक्षक-केन्द्रित विधि है जबकि आधुनिक शिक्षा बाल-केन्द्रित शिक्षा पर बल दे रही है।
3. इसमें समय का अपव्यय होता है क्योंकि बालक निष्क्रिय श्रोता के रूप में बहुत कम ग्रहण कर पाता है। शिक्षक की तैयारी भी व्यर्थ हो जाती है।
4. यह इस बात की कोई गारण्टी नहीं देता है कि छात्र व्याख्यान द्वारा दी गई विषय-वस्तु को समझ लेंगे।
5. छात्रों में लापरवाही उत्पन्न करने के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान करती है।

सुझाव (Suggestions)–व्याख्यान-विधि को छात्रोपयोगी बनाने के लिए निम्नांकित सुझावों पर ध्यान देना आवश्यक है–

1. व्याख्यान नियोजित होना आवश्यक है।
2. यह किसी एक केन्द्रीय विचार या समस्या या प्रकरण पर आधारित होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

3. शिक्षक को रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए।
4. यह हाव-भावयुक्त ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
5. इसमें मौखिक उदाहरणों तथा शाब्दिक चित्रों का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जाय।
6. यह मध्यम गति से प्रस्तुत किया जाय।

Scanned with CamScanner

9. वाद-विवाद विधि
(DISCUSSION METHOD)

आधुनिक शैक्षिक विचारधारा के अनुसार बालक को निष्क्रिय श्रोता नहीं माना जाता है वरन् उसको सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय बनाये रखने पर बल दिया जाता है। बालक जिस ज्ञान को क्रिया करके प्राप्त करता है वह स्थायी रहता है। बालक को सक्रिय बनाये रखने के दृष्टिकोण से विभिन्न क्रियात्मक शिक्षण-विधियों का प्रयोग किया जाता है। उनमें से एक वाद-विवाद विधि है। यह शिक्षण की वह विधि है जिससे शिक्षक और छात्र मिल-जुलकर किसी प्रकरण, प्रश्न या समस्या के सम्बन्ध में स्वतन्त्रतापूर्वक सामूहिक वातावरण में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। इसके अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए नीचे कुछ परिभाषाएँ दे रहे हैं–

1. जेम्स एम. ली–"वाद-विवाद एक शैक्षिक सामूहिक क्रिया है जिसमें शिक्षक तथा छात्र सहयोगी रूप से किसी समस्या या प्रकरण पर बातचीत करते हैं।"

"Discussion is an educational group activity in which teacher and the students talk over some problem or topic." **—James M. Lee**

2. रिस्क–"वाद-विवाद का अर्थ है–अध्ययन की जाने वाली समस्या या प्रकरण में निहित सम्बन्धों का विचारशील विवेचन।"

"Discussion means thoughtful consideration of the relationships involved in the topic under study." **—Thomas M. Risk**

3. सिम्पसन व योकम–"वाद-विवाद बातचीत का एक विशिष्ट स्वरूप है। इसमें सामान्य बातचीत की अपेक्षा अधिक विस्तृत एवं विवेकयुक्त विचारों का आदान-प्रदान होता है। सामान्यतः वाद-विवाद में महत्त्वपूर्ण विचारों एवं समस्याओं को सम्मिलित किया जाता है।"

"Discussion is a special form of conversation. It is an exchange of ideas of a more reasoned detailed kind, than that found in ordinary conversation and generally involves the conversation of important ideas and issues." **—Yoakam and Simpson**

वाद-विवाद के रूप–वाद-विवाद औपचारिक (Formal) तथा अनौपचारिक (Informal) दोनों ही रूप में हो सकता है। औपचारिक वाद-विवाद में प्रत्येक कार्य विधिवत् ढंग से किया जाता है। इसमें निश्चित नियमों के अनुसार कार्य होता है। ऐसे

Scanned with CamScanner

वाद-विवाद के लिए कक्षा के छात्र स्वयं में से सभापति, मन्त्री तथा अन्य पदाधिकारी चुनते हैं। छात्रगण इनके निर्देशन में समस्त कार्यों को निर्धारित नियमों के अनुसार करते हैं।

अनौपचारिक वाद-विवाद के संचालन के लिए किन्हीं निर्धारित नियमों का अनुसरण नहीं किया जाता है। इस प्रकार के वाद-विवाद में छात्र किसी विषय या प्रश्न या समस्या पर शिक्षक के निर्देशन में स्वतन्त्रतापूर्वक विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

वाद-विवाद विधि का स्वरूप—वाद-विवाद विधि के संचालन के लिए नेता, भाग लेने वालों, समस्या या प्रश्न तथा सामग्री की आवश्यकता है। वाद-विवाद के लिए छात्रगण स्वयं या शिक्षक समस्या प्रस्तुत कर सकता है। समस्या के प्रस्तुत होने के उपरान्त शिक्षक उद्देश्य पर प्रकाश डालेगा तथा उससे सम्बन्धित सामग्री के स्रोतों से सम्बन्धित सामग्री का अध्ययन करेंगे। वे इस प्रकार समस्या के किसी पक्ष पर अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए तैयार करेंगे। छात्रों के विभिन्न समूह-सदस्य सम्बन्धित सामग्री, आँकड़ों एवं सूचनाओं को एकत्रित एवं आत्मसात् करके निश्चित तिथि पर वाद-विवाद का कार्य प्रारम्भ करेंगे। निर्वाचित नेता या शिक्षक द्वारा वाद-विवाद का संचालन किया जायेगा। उसके निर्देशों के अनुसार वाद-विवाद का कार्य चलेगा। शिक्षक का कार्य छात्रों के सन्देहों को दूर करना होगा। वह एक साधारण सदस्य के रूप में कार्य करेगा। छात्रों के विचार-विमर्श के पश्चात् निर्वाचित नेता विषय से सम्बन्धित अपनी संक्षिप्त टिप्पणी प्रस्तुत करेगा। इसके उपरान्त वाद-विवाद कार्य की समाप्ति हो जायेगी। इस सम्पूर्ण कार्यवाही को छात्र मन्त्री द्वारा नोट किया जायेगा।

वाद-विवाद विधि के गुण एवं दोष (Merits and Demerits of Discussion Method)

गुण—

1. इसके द्वारा छात्रों में सहयोग एवं सहिष्णुता की भावना का विकास किया जाता है।
2. यह छात्रों को सहयोगी रूप से कार्य करने का प्रशिक्षण प्रदान करती है।
3. इसके द्वारा छात्रों में किसी वस्तु के सम्बन्ध में चिन्तन करने की शक्ति का विकास किया जाता है।
4. इसके प्रयोग से छात्र अपने भावों एवं विचारों को सुव्यवस्थित रूप में अभिव्यक्त करना सीख जाते हैं।
5. यह छात्रों में स्वतन्त्र अध्ययन करने की आदत का विकास करती है।
6. इसके द्वारा छात्र सामूहिक रूप से निर्णय करना सीख जाते हैं।
7. यह छात्रों को विषय-सामग्री का चयन एवं संगठन करना सिखाती है।

Scanned with CamScanner

दोष–

1. इस पद्धति के विपक्ष में यह कहा जाता है कि इसके द्वारा छात्र निरर्थक वाद-विवाद में पड़कर समय नष्ट करते हैं।
2. वाद-विवाद में कक्षा के कुछ ही छात्र प्रमुख रूप से क्रियाशील रहकर अन्य छात्रों को अवसर प्राप्त नहीं करने देते हैं।
3. इससे शर्मीले तथा मन्द बुद्धि बालक समुचित लाभ नहीं उठा पाते हैं।
4. इसका समुचित संचालन उच्च कक्षाओं में सम्भव हो सकता है।

सुझाव (Suggestions)—

1. समस्या का चयन सहयोगी रूप से किया जाय।
2. समस्या शैक्षिक महत्त्व की हो। साथ ही कक्षा के लिए अर्थपूर्ण या उपयोगी हो।
3. सभी छात्रों को वाद-विवाद में भाग लेने के लिए अवसर प्रदान किए जायें। इसके द्वारा अनौपचारिक वाद-विवाद नामक रूप का प्रयोग किया जाय।
4. विचारों की अभिव्यक्ति एवं उनके संगठन में छात्रों को सहायता प्रदान की जाय।
5. स्मृति की अपेक्षा तर्कों तथा निर्णयों पर बल दिया जाय।
6. छात्रों को निष्कर्षों एवं स्वतन्त्र निर्णयों के निर्माण में सहायता प्रदान की जाय।

Scanned with CamScanner